रात्रि क्लास 8/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

तुम अपने धर्म को नहीं बढ़ाते हो। तुम श्रीमत पर सभी को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हो। यह और कोई बता न सके। मनुष्य समझते हैं यह कोई नया धर्म स्थापन कर रहे हैं, मुँझ पड़ते हैं। इसलिए बिगड़ते हैं। जो भी हैं सभी समझते हैं यह कोई धर्म स्थापन कर रहे हैं वा ईश्वर को पाने लिए कोई नई संस्था बनाई है। जो तुम्हारी बुद्धि में है वह और कोई की बुद्धि में नहीं है। उनको तो यह पता ही नहीं है दुनिया खत्म हो रही है। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो हम अपना राज-भाग स्थापन कर रहे हैं। विकारों पर जीत कैसे पानी है यह कोई भी सिखलाते नहीं, तो सभी को नई बात लगती है। तुम्हारी बात ही अलग है। इस पुरानी दुनिया से जाना है, नई दुनिया स्थापन हो रही है, यह कोई की भी बुद्धि में नहीं है। 5 विकारों को जीतने (में) बड़ी मेहनत लगती है। यह भूत कोई जल्दी थोड़े ही निकलती है। काम तो है प्राइवेट। क्रोध प्राइवेट नहीं .....। झट भूं-2 करने लग पड़ते हैं। तुम बच्चों को समझाया जाता है जिनमें क्रोध है वह हैं असुर। उनकी बात सुनो नहीं। डेविल डेविल से टां-2 करेंगे। उस समय यह पता नहीं पड़ेगा हम अभी असुर हैं। ऐसे-2 समय किनारा कर लेना चाहिए। कोई चीज़ न मिलती है तो भूं-2 करते हैं। लोभ में भी भूं-2 करते हैं। कोई आस पूरी न होती है तो भूं-2 करते। यहाँ ऐसी भूं-2 न करनी चाहिए। लक्षण भी अच्छे चाहिए। पिछाड़ी में सुधरने की है। जल्दी नहीं सुधरती है। दैवीगुण वाले बहुत मीठे-शांत रहेंगे। क्रोध आता है तो अपने को भी दुखी करेंगे, और को भी दुखी करेंगे। कोई चीज़ न मिले तो सीनियर के पास आना चाहिए। हरेक बात में युक्ति से चलना होता है। वास्तव में कोई किसको गाली भी दे नहीं सकते। किसको गाली देना भी अपने हाथ में लॉ उठाते हैं। लॉ अपने हाथ में नहीं लेना है। सबसे लॉफुल तो बाप है। आपस में लड़ने-झगड़ने से तो आओ बाप के पास। बाबा पूछेंगे क्या चाहिए? भूत तो सभी हैं। कुछ न कुछ हरेक में है। तो अपने देह-अभिमान में आकर सभी भूल जाते हैं। बाप ने समझाया है सिमर-2 सुख पाओ। तमोप्रधान से ऊपर चढ़ते जाते हो। यह भी बाप से शिक्षा मिलती है अति दुख से अति सुख में जाने की। कम याद करेंगे तो कम मैनर्स आवेंगे। हरेक समझते हैं हमारे में कहाँ तक मैनर्स हैं। बाबा भी समझाते हैं अपनी मेहनत बढ़ाते जाओ। कोई में क्रोध है, तो कोई में क्या है, सभी मालूम तो पड़ता है ना। सभी धर्म तमोप्रधान ब(ने) हुए हैं। यह बात है सारी दुनिया के विरुद्ध। ड्रामा ऐसा बना हुआ है। जो तुम खुद (समझते) हो, यह सभी खत्म हो जावेंगे। राम गयो, रावण गयो.....तुम तो कुछ नहीं हो। बाकी तुम रहने वाले हो। ..... तुमसे दुश्मनी रखते हैं। कहते हैं यह तो विनाश-2 ही कहती रहती हैं। तुम तो लिखते हो इस विनाश के (बाद) विश्व में शांति होनी है। मनुष्यों की पत्थर बुद्धि है। उनमें झगड़ा आदि नहीं करो। सिर्फ बोलो बाप का हुकूम सभी भाई-2 हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो आप आकर नई (दुनिया) स्थापन करेंगे, तो हम भी नई दु॰ के मालिक बनेंगे। बोलो, हमने शास्त्र तो पढ़ी, अभी बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो। तो हमको बाप का ही मानना पड़ता है। शिवजयंती भी मनाते हैं। तुम्हारे पास कितने आते हैं। कोई तो झट बहुत अच्छा समझ ओपीनियन भी लिखते हैं। कोई सेक्शन .....। कोई से झगड़ा आदि न करना है। बहुत प्यार से कहना है शिवबाबा ब्रह्मा तन द्वारा कहते हैं मन्मनाभव। बिल्कुल सीधा तीर है। बाप कहते हैं मेरे साथ योग रखो तो तुम ऊँच ते ऊँच बन जावेंगे। जास्ती तिक-2 न करो। बाप तो कहते तुमको गुह्य-2 बातें सुनाता हूँ। जो नहीं समझ सकते हैं वह कहते रोज़-2 एक ही बात सुनाते हैं। तो छोड़ देते। कोई-2 की क्रिमिनल आई ऐसी है जो छोड़ेंगे ही नहीं। मर जावेंगे तभी नहीं छूटेगी। तो फिर माया के तरफ चले जावेंगे। तुम हरेक के चलन से समझ सकते हो। बाबा भी समझ सकते हैं। बहुत हैं जो अपनी गफलत बताते हैं। बाबा की नॉलेज ऐसी है जो बस कम कार डे... बाप को याद करते रहो। मीठा बनते जाओ। इसमें सहनशीलता बहुत चाहिए। सहन न करने से झट भूं-2 करने लग पड़ते हैं। एक ही बात समझाकर छोड़ दो। गॉड फादर जो सभी का बाप है, कहते हैं मेरे से वर्सा लेना है तो मुझे याद करो। सभी तो समझाने वाली एक जैसी नहीं है। कइयों को बात करने का भी अकल नहीं। देह-अभिमान इतना कड़ा है। बाप को याद करो तो देह-अभिमान कम हो जावे। विजय इसमें ही है। अच्छा, गुडनाइट।